केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सैकण्डरी स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा दसवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश–पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject :	HINDI COURSE - B
विषय कोड Subject Code :	085
परीक्षा का दिन एवं तिथि Day & Date of the Examination :	TUESDAY, 08.03.2016
उत्तर देने का माध्यम Medium of answering the paper :	HINDI
प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को दर्शाएं : Write code No. as written on the top of the question paper :	Code Number: 4/2/3 — Set Number: ① ② ● ④
अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या No. of supplementary answer-book(s) used	Nil
विकलांग व्यक्ति : Person with Disabilities : हाँ / नहीं Yes / No	No

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं।
If physically challenged, tick the category

B D H S C A

B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक
C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged
S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखन – लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं **Whether writer provided : Yes / No**	No
यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये सॉफ्टवेयर का नाम : If Visually challenged, name of software used :	N.A.

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

7814839
085/12271/15702

खंड - घ

8. (क) ख्यूक्रिन एक सुनार था। एक कुत्ते ने उसकी उँगली को बेवजह काट खाई थी। अतः वह एक हफ़्ते तक अपना पेचीदा किस्म का काम नहीं कर पाएगा और उसका नुकसान होगा। इसलिए वह उस कुत्ते के मालिक से मुआवज़ा पाना चाहता था।

(ख) लेखक की माँ वनस्पति और जीव-जगत का बहुत आदर करती थीं। और वे कहती थीं कि दिन छिपने के बाद पेड़ों से पत्ते तोड़ने से वे रोते हैं। रात में फूल तोड़ने से वे श्राप देते हैं। वे कबूतर को हज़रत मुहम्मद की अज़ीज़ मानती थीं और मुर्गों के प्रति भी सम्मान प्रकट करती थीं। वे समुद्र को सलाम करके उसे खुश करने के लिए कहती थीं।

(घ) जापानियों के दिमाग की रफ़्तार अन्य लोगों से हज़ार गुना तेज़ होने के कारण ऐसा लेखक ने कहा है।

9\. जापान में चाय पीने की विधि को टी-सैरमनी या 'चा-नो-यू' कहा जाता है, जिसमें चाय एक-एक बूँद करके पी जाती है। इस तरह शांत वातावरण में चाय पीने से दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे धीमी पड़ती चली जाती है। कुछ समय बाद बिल्कुल बंद भी हो जाती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो व्यक्ति अनंतकाल में जी रहा हो। उसे सन्नाटा भी सुनाई देने देता है। उसके दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ जाते हैं, और वह केवल वर्तमानकाल में जीता है जो अनंतकाल जैसा विस्तृत मालूम होता है।

10\. (क) व्यवहारवादी उन्हें कहा जाता है जो आदर्श को व्यावहारिक बनाकर जीवन में अपनाते हैं। वे हमेशा सजग रहते हैं क्योंकि वे दूसरों से आगे बढ़ना चाहते हैं और सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। वे लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं।

(ख) स्वयं ऊपर चढ़ना और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलना ही महत्त्व की बात मानी गई है, क्योंकि इसी से समाज की उन्नति होती है और परोपकार की भावना स्पष्ट झलकती है।

(ग) आदर्शवादी लोगों ने स्वयं ऊपर चढ़कर अपने साथ ~~ही~~ दूसरों को भी ऊपर ले चला है। इस प्रकार वे समाज में शाश्वत मूल्यों की स्थापना भी करते हैं।

11. (क) कवि ने कहा है कि प्राण छोड़ते समय सैनिकों की साँस थमती गई और नसें जमती गई, फिर भी उन्होंने बढ़ते कदम को नहीं रोका। उनके सिर कटते गए, मगर उन्होंने हिमालय का सिर झुकने नहीं दिया। वे देश के लिए अपनी अंतिम साँस तक कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करते रहे।

(ख) भरे पूरे घर परिवार में नायक-नायिका इशारों (आँखों) के माध्यम से बात करते हैं। सबकी उपस्थिति में नायक ने नायिका को इशारा किया। नायिका ने इशारे से मना किया। इस पर नायक रीझ गया। इस रीझ पर नायिका खीझ उठी। दोनों के नेत्र मिले, नायक प्रसन्न था और नायिका की आँखों में लज्जा थी।

(ग) आकाश में चमकते तारों को स्नेहहीन कहा गया है क्योंकि उनके आपस में कोई स्नेह नहीं है, और वे प्रभु-भक्ति से शून्य हैं (आस्थाहीन ~~दीपक~~ और बिना तेल के दीपक के समान)

12. 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल !' आध्यात्मिक कविता है जिसमें दीपक प्रभु-भक्ति की लौ का प्रतीक है।
कवयित्री चाहती है कि उसके मन में आस्था-रूपी दीपक निरंतर जलता रहे - मधुर भाव से, पुलक भाव से, कँपते हुए, हँसी-खुशी से। वह चाहती है कि उसका जीवन प्रभु के काम आए। वह प्रभु के मार्ग पर दीपक-सी बनकर जलती रहे। वह अपनी सुगंध से सभी दिशाओं को महकाती रहे। सारी दुनिया में प्रभु भक्ति की अधूरी चाह है। सांसारिक लोभ और तृष्णा के कारण लोगों के हृदय जल रहे हैं। उन्हें शांति चाहिए, भक्ति चाहिए। कवयित्री ~~अपनी~~ अपने तन को गलाकर, अपना अहं भाव त्यागकर, अपने प्रियतम को प्राप्त करना चाहती है। वह अपनी भक्ति-भावना से सारे जगत के आँगन को महकाना चाहती है।

13. कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि व स्वतंत्र रूप से अपने बल पौरुष द्वारा जीवन की कठिनाइयों को पार करने में सक्षम होना चाहता है; और एक सहायक पर निर्भर नहीं होना चाहता।
इस कविता में कवि स्वयं अपने बल पर अपने दुखों पर त्राण पाना चाहता है। वह कष्टों से छुटकारा नहीं, बल्कि उन्हें सहने की शक्ति ~~चाहता है~~ के लिए प्रार्थना करता है। वह चाहता है कि इस संसार के लोगों द्वारा धोखा खाने के पश्चात भी वह मन में हार न माने। वह कभी भी परमात्मा के प्रति

संशय न करें। वह सुख के समय में भी ईश्वर को याद करें और उनके प्रति विनय प्रकट करें। उसका बल पौरुष कभी न हिले, वह निडर होकर संकटों का सामना करें, और ईश्वर के प्रति उसकी आस्था सदा - सर्वदा बनी रहे।

खंड - 'ख'

3.(i) जब शब्द व्याकरणिक नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयुक्त होता है तब उसे पद कहते हैं।

उदा. सेब → शब्द

राम सेब खाता है। (यहाँ 'सेब' एक पद बन जाता है।)

(ii) शब्द → एक या अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि।

पद → वाक्य में प्रयुक्त शब्द ~~शब्द~~ को पद कहते हैं।

4.(i) जैसे ही श्याम ने यमुना तट पर मुरली बजाई, वैसे ही सारी गायें इकट्ठी हो गईं।

ii) वे वहाँ गए और क्रिकेट का मैच देखने लगे।

iii) सरल वाक्य

5(क) * मृदु (मधुर) है जो वचन - कर्मधारय समास

* देह का दान - तत्पुरुष समास

(ख) * प्रकृतिवर्णन - तत्पुरुष समास

* गौरवर्ण - कर्मधारय समास

6.

6. (क) हमने उससे कह दिया था।

(ख) तुम अपना पक्ष रखो।

(ग) हमारे दोनों लड़के इसी शहर में रहते हैं।

(घ) आप हमारे घर ~~कब~~ कब आएँगे ?

7. * वह इस इलाज के लिए हाँ कहते हुए अपने प्राण हथेली पर रख रहा है।

* मैं प्रतियोगिता जीत गई, इसलिए घी के दिये जलाओ

खंड - घ

14. परीक्षा भवन,
अ. ब. स. विद्यालय,
नई दिल्ली।

दिनांक : 8 मार्च, 2016.

अधीक्षक महोदय,
डाक केंद्र कार्यालय,
नई दिल्ली।

विषय : डाक पहुँचाने की अव्यवस्था।

माननीय महोदय,
सूचनार्थ निवेदन है कि मैं च. ड. ट. क्षेत्र का निवासी हूँ। गत एक माह से हमारे इलाके में डाक वितरण अनियमित रूप से चल रहा है। इसका प्रमुख कारण है इस क्षेत्र के पोस्टमैन की लापरवाही। वह नियमित रूप से डाक नहीं पहुँचाता और आग्रह करने पर हमें बुरा - भला सुनाता है।

इसके कारण यहाँ के निवासियों को अनेक अवि असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है।
आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया इस समस्या को सुलझाने का प्रयास करें और पोस्टमैन को नियमों का पालन ताकि भविष्य में हमें संकटों का सामना न करना पड़े।

सधन्यवाद।
भवदीय,
क. ख. ग

15\. (ख) जीवन में श्रम की महत्ता

मनुष्य सदा प्रगति-पथ पर आगे बढ़ना चाहता है। इसके लिए जीवन में एक अति-महत्त्वपूर्ण अंग की आवश्यकता है - श्रम। हम श्रम से ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं। श्रम के विभिन्न रूप हैं। कुछ लोग मानसिक श्रम करते हैं, जिससे वे बुद्धि का विकास करते हैं। अन्य लोग परिश्रम करके अपने लक्ष्य लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल एक ही मूल मंत्र - परिश्रम। कठोर साधना के पश्चात ही महान लोग प्रसिद्ध हुए हैं। इससे अनुशासन और अभ्यास भी जुड़े हुए हैं। श्रम के महत्त्व को समझते हुए हमें भी अपार श्रम करना चाहिए।

16.

सूचना

अ.ब.स. समिति

योग की कक्षाएँ

8 मार्च 2016

इस मुहल्ले के निवासियों को सूचित किया जा रहा है कि निवासियों के लिए योग की कक्षाएँ प्रारंभ की जा रही हैं :-

स्थान : मयूर पार्क
समय : सुबह 7 बजे से 9 बजे तक
शुल्क : नि : शुल्क
दिनांक : प्रति शुक्रवार और रविवार

कृपया इन कक्षाओं का लाभ उठाएँ ताकि आप सदा स्वस्थ्य रह सकें।

क्ष. त्र. ज्ञ
सचिव
अ.ब.स. समिति

17. राम : क्या तुमने सुना ? कल दिल्ली में एक धरना हुआ था।

श्याम : हाँ। यह धरना विद्यार्थियों द्वारा आयोजित किया गया था।

राम : आजकल हड़ताल - धरने बहुत अधिक बढ़ गए हैं।

श्याम : ठीक कहा।

राम : लोगों को अपनी माँगें पूरी करने के लिए सरकार को विवश कर देते हैं।

श्याम : यह अच्छी बात ही तो है। लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं।

राम : परंतु इससे जनशांति भंग हो जाती है।

श्याम : बिल्कुल सही।

राम : हमें शांतिपूर्वक अपना प्रस्ताव सरकार के सामने रखना चाहिए।

श्याम : और एक संतुष्ट और शांत जीवन जीना चाहिए।

18.

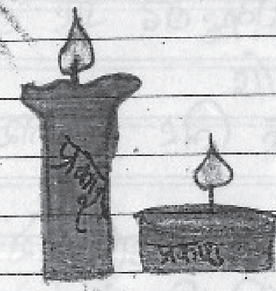

यह देता है आपको प्रकाश,
आप इससे न होंगे निराश!
आज ही खरीदिए प्रकाश मोमबत्तियाँ

सिर्फ ₹20

→ विभिन्न रंगों और आकारों में उपलब्ध
→ विभिन्न सुगंध - सहित

आज ही खरीदिए!

खंड - क

1\. (क) हर मौसम का अपना मिजाज, अपना अंदाज, अपनी खुशबू, अपना स्पर्श होता है, जो हमें तरह तरह तरह की भावनाओं, अनुभूतियों से भरकर हमारे अनुभव - जगत का विस्तार करता है। हम इन प्रकृति के रूपों, अर्थात ऋतुओं को निःशब्द हुए उसे निहारने लगते हैं। इसका हम पर मनोवैज्ञानिक असर भी होता है।

(ख) ~~पत्ते~~ बसंत ऋतु में : फूलों से ~~आक~~ आवृत कर खिलखिलाहट से भर देना। वर्षा ऋतु में : इधर इधर पानी बरसाकर तर कर देना। ये दो अनुठे रूप मुझे अधिक प्रभावित करते हैं।

(ग) ग्रीष्म के अलसाए दिन लंबे होने के कारण, ठंडे बंद कमरों में लेटे दिलो - दिमाग को आत्मचिंतन का खूब समय देते हैं (मनोवैज्ञानिक प्रभाव)। इससे लेखक प्रभावित होता है।

(घ) मधुमास ~~हमारी~~ एक महीना है ~~जहा~~ जिसमें बसंत ऋतु का अनुभव किया जाता है। मधुमास हमारी रचनात्मक प्रवृत्ति को तराश देता है और हमें तरह - तरह से रचनात्मक बनाता है।

(ङ.) सुख और दुख में से एक भी दशा स्थायी नहीं है, अत: हमें न सुख में अधिक सुखी और न दुख में अधिक दुखी होना चाहिए ; तटस्थ भाव: से जीना चाहिए ।

(च) प्रकृति के विभिन्न मनमोहक रूपों को देखते ही हम चकित और प्रभावित हो जाते हैं, ~~हम~~ हम उस सौंदर्य को शब्दों से वर्णन नहीं कर सकते, और हम उसे निहारते रहते हैं।

2\. (क) दोनों, दो लिड़कियाँ हैं और वे बहुत छोटी और मामूली चीजें जैसे गाय: दूध देती हैं, ओरदू ~~है भूसा थ~~ हैं, ~~पर~~ वे इनके बारे में बातचीत कर रही हैं ।

(6)

(ख) क्योंकि वे शादी के बाद वे अपने ससुराल के घर चली जाएँगी । माता-पिता इन्हें एक भार के समान मानते हैं ।

(ग) कवि कहता है कि यदि ईश्वर ने बेटियों (~~स्त्रीयों~~ की रचना की है तो उनके मान-सम्मान एवं सुरक्षा की व्यवस्था भी समाज के लिए प्रदान करें ।

(घ) अस्सरसुा, समाज में नारी को बराबर अधिकार नहीं दिए जाते; विद्यालय जाने से पाबंध (नारियों के लिए)। [redacted]

समाज में पुरुष और स्त्री दोनों को ~~एक~~ बराबर मानना चाहिए। उनके बीच लिंग के आधार पर सार्वजनिक स्थलों और परिवार के अंदर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए।

2

[redacted] [redacted] [redacted]

Pawan

[redacted]